नमिता
neerujp@gmail.com

श्री विष्णु शर्मा तथा श्री नारायण पण्डित के कथा-ग्रन्थों की शैक्षिक उपयोगिता

संसार के प्रत्येक देश में शिक्षा प्रणाली उस राष्ट्र के भावी नागरिकों व निर्माताओं को अपनी राष्ट्रीय संस्कृति, धर्म व सभ्यता के विकास, संरक्षण व प्रचार और प्रसार के लिए तैयार करती है तथा उस राष्ट्र के लोगों की सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, धार्मिक व राजनैतिक आवश्यकताओं व समस्याओं का यथासंभव समाधान देती है।

वर्तमान काल में शिक्षा के क्षेत्र में भी निरन्तर प्रगति हो रही है, यह हर्ष का विषय है। अनेक कला-कौशलों के विकास के साथ-साथ मनोविज्ञान और तकनीकी के विविध प्रयोगों द्वारा शिक्षा को अधिकाधिक वैज्ञानिक बनाने का सतत प्रयास चल रहा है तथा सफलता भी मिल रही है। सब कुछ होते हुए भी समाज में द्वेष, अराजकता, पापाचार आदि असामाजिक कृत्य मन में बड़ा क्षोभ बढ़ाते है।

भारतीय शिक्षा, मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियों का संतुलित विकास करके उसके स्वभाव में परिवर्तन करती है। इस प्रकार शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि हम समाज के लिए उपयोगी नागरिक बन सकें। यह अप्रत्यक्ष रूप से इहलोक एवं परलोक दोनों में हमारी सहायता करती है।

भारतीय विचारधारा की समृद्धता निर्विवाद है- ''सा विद्या या विमुक्तये'' को लक्ष्य बनाकर शिक्षा नियोजित की जाती थी। यहाँ शिक्षा का लक्ष्य चारों पुरूषार्थ की प्राप्ति माना पाता रहा है। शिक्षा का कार्य है मस्तिष्क को इस योग्य बनाना कि वह चिरन्तन सत्य को पहचान सके, उसके साथ एकरूप हो सके और उसे अभिव्यक्त कर सके। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार- ''शिक्षा व्यक्ति में अन्तर्निहित पूर्णता का विकास है।'' अतः कह सकते हैं कि भारतीय विचारधारा के अनुसार शिक्षा मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक शक्तियों का संतुलित विकास करके उसके स्वभाव में परिवर्तन करती है।

श्री विष्णु शर्मा द्वारा रचित 'पन्चतन्त्रश्' एवं श्री नारायण पण्डित द्वारा लिखित 'हितोपदेश' केवल भारत के ही नहीं, अपितु विश्व के अनूठे कथा-ग्रन्थ हैं। जहां पन्चतन्त्र, बाइबिल के पश्चात संसार का सर्वाधिक प्रचलित कथा-ग्रन्थ माना गया है, वहीं हितोपदेश को संस्कृत विद्यामंदिर के द्वारस्थान के रूप में सम्मानित किया गया है। इन दोनों ही कथा-ग्रन्थों में विविध कथाओं की योजना करके उनमें कौतूहल एवं मनोरंजन के साथ नीति-उपदेश का अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत किया गया है। कथाकारों ने बुद्धिपूर्वक व्यवहार को मानव-जीवन का सर्वोपरि आदर्श मानकर चतुराई एवं बुद्धि से परिपूर्ण कहानियों के द्वारा अत्यन्त बाल-शिक्षा-उपयोगी रूप में प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है।

पन्चतन्त्र एवं हितापदेश, दोनों ही ग्रंथों का मूल आधार शिक्षा है। विद्वान् लेखकों ने पशु-पक्षियों की एवं मानवपरक छोटी-छोटी कहानियों के सुन्दरतम कलेवर में सामाजिक, व्यवहारपरक, राजनीतिपरक, सदाचारमूलक एवं लोकनीति-विषयक शिक्षा को प्रस्तुत करते हुए इन्हें शिक्षा के कोष के रूप में प्रस्तुत किया है। ये महानतम ग्रंथ शिक्षापरक वैशिष्ट्य से मूर्खों को भी व्यवहारकुशल, सदाचार-सम्पन्न एवं नीतिपटु बनाने वाले हैं, जैसा कि श्री विष्णु शर्मा द्वारा राजा अमरकीर्ति के पुत्रों के वर्णन से स्पष्ट होता है।

समाज एवं शिक्षा-शास्त्रियों के सामने यह ज्वलन्त प्रश्न है कि शिक्षा की इतनी प्रगति के बावजूद विद्यार्थियों में व्याप्त हिंसा, अशान्ति, अनैतिकता एवं चारित्रिक पतन को दूर कर बालक में व्यावहारिक व नैतिक ज्ञान को

अन्तःकरण की गहराई तक कैसे पहुंचाया जाए? पं. विष्णु शर्मा विरचित कथा-साहित्य पन्चतन्त्र तथा श्रीनारायण पण्डित द्वारा विरचित हितापदेश इस प्रश्न का उत्तर देते हैं; क्योंकि पन्चतन्त्र एवं हितापदेश में वर्णित प्रेरणाप्रद एवं बालोपयोगी शिक्षा में मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिए प्रकाश स्तम्भस्वरूप हैं।

यतः पन्चतन्त्र तथा हितोपदेश में प्रयुक्त शिक्षण-विधियॉं, शिक्षण-सूत्र व शिक्षा में किये गये नवीन प्रयोग समाज के लिए विभिन्न समस्याओं का उत्तर देने में समर्थ हैं। अतः वर्तमान समाज में व्याप्त विसंगतियों का समाधान करने के लिए पन्चतन्त्र तथा हितोपदेश की कथाओं में वर्णित बाल मनोविज्ञान व शिक्षण सिद्धांतों को वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में लागू करना अत्यन्त आवश्यक है। गिज्जू भाई ने भी ऐसी विचारधारा का समर्थन किया है। अन्य चिन्तक भी बालकों को सम्पूर्ण समाज-व्यवस्था का केन्द्र-बिन्दु मानते हैं तथा बाल्यावस्था के संस्कार को सम्पूर्ण जीवन की नींव के रूप में स्वीकार करते हैं।

आज हमारे समाज और देश में सबसे बड़ा संकट मानवीय चरित्र का है। प्रायः व्यक्ति के आचरण में नैतिकता का अभाव दृष्टिगोचर होता है। अतः मानव मूल्यों में अवमूल्यन हो रहा है तथा अनैतिकता का बाहुल्य है। इस सम्बन्ध में पं. जवाहर लाल नेहरू ने सन् 1959 में आजाद स्मृति व्याख्यान देते हुए कहा था, ''हम मौलिक सिद्धांतों को भी भूल नहीं सकते जिसके कारण अनन्तकाल से भारत की विशेषता व मजबूती रही है। औद्योगिक प्रगति की ओर हम पूरी ताकत व निष्ठा के साथ आगे बढ़ें, पर साथ ही स्मरण रहे कि भौतिक उपलब्धियॉं विना करूणा, सहनशीलता एवं विवेक, राख में मिल जायेगी। "

उक्त परिस्थिति में पन्चतन्त्र तथा हितापदेश जो बच्चों की नैतिक शिक्षा से ओत-प्रोत हैं। बच्चों के लिए प्रत्युत सम्पूर्ण समाज के लिए उपयोगी हो सकते हैं। इस सम्बन्ध में नारायण पण्डित ने सचेत करते हुए कहा है कि व्यक्ति को पठन-पाठन एवं जीवन के कार्यों में अतिलोभ से पृथक रहना चाहिए; क्योंकि लोभ से आसक्त होकर वेद ज्ञानी, शास्त्रवेत्ता तथा संशय निवारक पुरूष भी कष्ट का अनुभव करते हैं-

''सुमहान्त्यपि शास्त्राणि, धारयन्तो बहुश्रुताः।
छेत्तारः संशयानां च, क्लिश्यन्ते लोभमोहिताः।।[1]

इसी प्रकार से पन्चतन्त्र में भी लेखक ने लोभ को कष्टकारी बताते हुए वृद्ध व्याघ्र तथा लोभ से आक्रान्त पथिक का उदाहरण उद्धृत किया है-

''कड्कणस्य तु लोभेन, मग्नः पड्कें सुदुस्तरे।
वृद्धव्याघ्रेण सम्प्राप्तः, पथिकः स मृतो यथा।।''[2]

बच्चे के जीवन पर सत्संगति का विशेष प्रभाव पड़ता है। सत्संगति के प्रभाव को दोनों ही ग्रन्थकारों ने मानव के जीवन- भरण-पोषण में बहुत ही उपयोगी निर्दिष्ट किया है। उन्होंने बताया है कि जो सज्जन व्यक्ति होते हैं, वे भी असत्संगति के प्रभाव से सद्मार्ग से असद्मार्ग की ओर प्रेरित हो जाते हैं। इस सम्बन्ध में पन्चतन्त्रकार ने दुर्जन के प्रभाव से प्रभावित होकर भीष्म जैसे विवेकी सत्पुरूष एवं ज्ञानवान योद्धा का भी प्रभावित होना वर्णित किया है-

''असतां सङ्गदोषेण, साधवो यान्ति विक्रियाम्।
दुर्योधन प्रसङ्गेन, भीष्मो गोहरणे गतः।।''[3]

तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति सज्जन होते हैं, वे हमेशा सज्जन रहेंगे, यह आवश्यक नहीं है; क्योंकि भीष्म पितामह जैसे सज्जन और श्रेष्ठ पुरूष भी दुर्योधन के सम्पर्क में रहने के कारण एक बार राजा विराट् की गाय चुराने के लिए भ्रमित हो गये थे। इसलिए मानव को सर्वदा सत्पुरूष की सङ्गति का आश्रय ग्रहण करना चाहिए। यह कोमल बुद्धिधारक बच्चों के लिए सद्मार्ग पर हमेशा चलते रहने के लिए विशेष प्रेरणाप्रद कथन है; क्योंकि हितोपदेशकार की मान्यता है कि सत्सङ्गति के प्रभाव से जो गुण बुद्धिमान और गुणी व्यक्तियों के साथ गुण रूप में होते हैं, वे ही गुण बुरे व्यक्तियों के सम्पर्क में आकर दोष रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। जिस प्रकार से नदियों का जल आस्वाद्य योग्य होता है, वही जल जब समुद्र में मिल जाता है, तो अपेय हो जाता है। इसलिए दोनों ही ग्रन्थकारों के सन्देश बच्चों को निरन्तर सद्गुणीयों के साथ रहने की प्रेरणा देने के लिए बहुत उपयोगी हैं।

''गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति,
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।

आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः,
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः।।''[4]

दोनों ही ग्रन्थकारों के विचार, बच्चों को निरन्तर परिश्रम और प्रयासरत रखने के लिए नितान्त उपयोगी हैं। दोनों का ही विचार है कि व्यक्ति को भाग्य के भरोसे अपने कर्तव्य-मार्ग से कभी भी पृथक् नहीं होना चाहिए; क्योंकि उद्योगी पुरूष को ही अपने उद्देश्य की प्राप्ति होती है।जो व्यक्ति भाग्य के भरोसे रहते हैं, वे कभी भी जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। नारायण पण्डित का कथन है-

उद्योगिनं सततमत्र समेति लक्ष्मी-
दैवं हि दैवमिति कापुरूषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरू पोरूषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोडत्र दोषः।।[5]

परिश्रम के इसी महत्व को श्री विष्णु शर्मा जी न्यून अन्तर से इस प्रकार कहते हैं। उद्योगिनं पुरूषसिंहमुपैति लक्ष्मी-

दैवेन देयमिति का पुरूषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरू पोरूषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोडत्र दोषः।।[6]

दोनों ही ग्रन्थकारों के ग्रन्थ बच्चों के लिए बहुत ही उपयोगी है;क्योंकि एक बार व्यक्ति में दुर्गण आ जाने पर उनका निवारण करना बहुत ही कठिन होता है। जिस प्रकार से सर्प के स्वभावतः विषधारक होने के कारण उस दोष को उन्हें दूध पिलाने से भी विषरूपी दोष की निवृत्ति नहीं की जा सकती है। जैसा कि हितोपदेशकार ने कहा है कि-

''पयः पानं भुजङ्गानां, केवलं विषवर्धनम्।
उपदेशो हि मूर्खाणां, प्रकोपाय न शान्तये।।''[7]

इस सम्बन्ध में श्री विष्णु शर्मा का मत है कि बच्चे का स्वभाव और बुद्धि सरल और स्वच्छ होने के कारण यदि कोई कृत्रिम दोष आ भी जाता है, तो उनको सद्शिक्षा, सद्उपदेश तथा सद्विचारों के द्वारा दूर किया जा सकता है-

''कृत्रिमं नाशमभ्येति वैरं द्राक्कत्रिमैर्गुणैः।
प्राणदानं विना वैरं सहजं याति न क्षयम्।।[8]

दोनों ही ग्रन्थ बच्चों के कोमल, सहज और निर्मल मन, बुद्धि को सद्विचारों, सद्भावों व सद्गुणों से आप्लावित करने के लिए उपयोगी शिक्षा प्रदान करते हैं तथा व्यक्ति के संकुचित, स्वार्थी एवं स्वहित को त्यागकर ''सर्वजन सुखाय व सर्वजन हिताय'' की भावना से न केवल परिवार को, न केवल प्रदेश को, न केवल देश को प्रत्युत पूरे संसार को कुटुम्ब के रूप में मान कर प्रेरणा प्रदान करते हैं। जिस प्रकार एक राष्ट्रभक्त न केवल एक व्यक्ति की, न केवल एक समाज की, न केवल एक प्रदेश की, न केवल एक देश की बल्कि पूरे विश्व की उन्नति की इच्छा करता है, उसी प्रकार ये ग्रन्थ पूरे विश्व को एक कुटुम्ब के रूप में मानकर पूरे विश्व में सुख, शांति, समरसता, सद्भाव और विकास के लिए प्रेरित करने में बहुत उपयोगी हैं। जैसा कि कहा गया है कि-

''अयं निजः परोवेति, गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु, वसुधैव कुटुम्बकम्।।''[9]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि श्री विष्णु शर्मा द्वारा रचित पन्चतन्त्र तथा श्री नारायण पण्डित द्वारा रचित हितापदेश संस्कृत-कथा-साहित्य-आकाश-ज्ञान-गंगा के देदीप्यमान एवं जाज्वल्यमान दो नक्षत्र हैं क्योंकि जिस प्रकार से रवि-किरण निर्मल एवं स्वच्छ, स्फटिक मणि में प्रवेश कर मणि को प्रकाशित एवं स्वानुरूप करने में समर्थ होती है, उसी प्रकार से बहुश्रुत एवं बहुप्रसिद्ध इन दोनों कथाग्रंथों के अपने सरल, सरस, सहज, रोचकपूर्ण कौतूहल-गर्भित, सारगर्भित एवं शिक्षाप्रद व नीति-सम्पन्न कथा-कथानक, विचार-शून्य-अविज्ञात-उद्देश्य तथा स्वच्छ एवं साफ स्लेट के समान छल-प्रपन्च एवं कलुषताविहित बालकों के बुद्धिपटल को अपनी प्राकृतिक, सर्व-सुलभ एवं सर्वग्राहीय कथन, विचार एवं भावों के द्वारा उनको विभिन्न अज्ञानजनित लोभ, असत् सङ्गति, असंतोष पूर्णजीवनयापन, कर्तव्यज्ञान-शून्यता, आलस्य आदि दुर्गुणों का परिहार करते हुए उनमें वित्त के सदुपयोग सत्सङ्गति, विवेकपूर्ण जीवन-यापन, सन्तोष एवं शान्तिपूर्ण दैनिक व्यवहार कर्तव्य के प्रति सचेत एवं उद्देश्य प्राप्ति हेतु सतत परिश्रम एवं प्रयत्नशीलता तथा समय के सदुपयोग आदि गुणों के ज्ञानालोक से प्रकाशित करने में पूर्णरूपेण समर्थ एवं सक्षम है।

कारण स्पष्ट है कि सामान्य रूप से शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को उस-उस ज्ञान की सीमित जानकारी देना अथवा उस-उस विविध ज्ञान से अवगत कराना होता है जिस-जिस ज्ञान को उसने अभी तक पढ़कर तथा सुनकर अधिगत नहीं किया है। किन्तु पन्चतन्त्र तथा हितोपदेश नामक कथा-ग्रन्थ, वेद, उपनिषद, पुराण, महाभारत, रामायण एवं गीता के अथाह गम्भीर, गूढ़ एवं दुरूह वचनामृतों को समुद्र मंथन के समान मथकर सरल एवं सरस कहानी रूप कथनामृतों द्वारा सरल, सरस एवं बोधगम्य बनाकर अपार व असीमित ज्ञान गंगा में अवगाहन करने में असमर्थ सुकोमल बुद्धिधारक पाठकों को इतनी सरलता, सरसता व सहजता से उनका रसपान करा देते हैं कि वे इन सरल, सरस तथा व्याव्हारिक कहानियों को श्रवण तथा पठन करने के पश्चात चिन्तन एवं मनन करते हुए निदिध्यासन रूप व्यवाहारिक व्यवहार में परिणत करने के लिए स्वतः प्रेरित हो जाते हैं। वास्तव में यही शिक्षा की वास्तविक उपयोगिता है जिस कसौटी पर ये दोनों ग्रंथ खरे उतरते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् 'स्किन' नामक विद्वान भी शिक्षा की सार्थकता एवं उपयोगिता, बच्चे की बुद्धि में उस-उस विभिन्न ज्ञान को अवधारित कराकर उसे व्यावहारिक रूप में परिणत करने में विश्वास करते हैं। शिक्षा विषयक इसी प्रकार का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं-

''शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तियों को यह सिखाना है कि वे वह व्यवहार करें, जो व्यवहार वे नहीं करते हैं।''अतः इन दोनों ग्रन्थों में सन्निहित शिक्षा की उपयोगिता एकदेशीय, एकस्थानीय अथवा एकवर्गविशेषीय नहीं है, प्रत्युत ज्ञानामृत आप्लावित इन ग्रंथों में प्राप्त शिक्षा सर्वस्थानीय सर्वदेशीय, सर्वजनीन तथा सर्ववर्गीय होने के कारण पूर्व में भी यह उपयोगी थी , वर्तमान समय में भी उपयोगी है तथा भविष्य में भी उपयोगी ही नहीं बल्कि महोउपयोगी बनी रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा सरोज (2007). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*, साहित्य प्रकाशन
2. *हितोपदेश* : मित्रलाभ, पृष्ठ-24, सम्पादक-आचार्य वादनारायण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
3. *हितोपदेश* : मित्रलाभ, पृष्ठ-19, सम्पादक-आचार्य वादनारायण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
4. मेहरोत्तरा आर.आर., अग्रवाल ए.के., गांगुली एस. (1990), *नेहरू, मैन अमन्ग मेन*, मित्तल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. *पन्चतन्त्र* : मित्रभेद, श्लोक-274, श्री विष्णु शर्मा, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी-1, 1968
6. *हितोपदेश* : प्रस्ताविका, पृष्ठ-15, सम्पादक-आचार्य वादनारायण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
7. *पन्चतन्त्र* : मित्रभेद, श्लोक-217, श्री विष्णु शर्मा, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी-1, 1968
8. *हितोपदेश* : प्रस्ताविका, पृष्ठ-12, सम्पादक-आचार्य वादनारायण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
9. *हितोपदेश* : विग्रह, पृष्ठ-154, सम्पादक-आचार्य वादनारायण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
10. *पन्चतन्त्र* : मित्रसम्प्राप्ति, श्लोक-32, श्री विष्णु शर्मा, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी-1, 1968
11. *हितोपदेश* : मित्रलाभ, पृष्ठ-39, सम्पादक-आचार्य वादनारायण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
12. आर.एन. शर्मा एवं आर.के. शर्मा (2006), *एडवान्सड एजूकेशनल साइकोलॉजी*, अटलांटिक पब्लिशर एण्ड डिस्ट्रीब्यूटरस, पृष्ठ संख्या 13.